भूतों के बीच

• मीरा मिश्रा

बचपन में हम गर्मी की छुट्टियाँ बिताने गाँव जाते थे। उन दिनों गाँव के बगीचे बीजू आमों से लदे होते थे। मुझे आम खाने से अधिक मज़ा उन्हें ढेला मारकर तोड़ने में आता। और इससे भी ज़्यादा मज़ा अँधेरे में, टॉर्च की रोशनी में दोस्तों के साथ आम चुनने में आता।

बगीचे में उन दिनों भी 30-40 पेड़ थे। पूरा बगीचा छोटकी बारी (छोटा बाग) और बड़की बारी में बँटा हुआ था। बगीचे के सारे पेड़ों के अलग-अलग नाम थे जैसे, चउरहवा, करियवा, अमोला, तोता, शेरवा, पिपरहवा आदि। हर पेड़ के फल की अपनी खास बनावट और स्वाद था। बच्चों को यदि पूरी बारी में कहीं आम नहीं मिलता तो लिटिहवा के नीचे उनकी इच्छा ज़रूर पूरी हो जाती। यह बड़की बारी का सबसे बड़ा पेड़ था। इसके फल छोटे-छोटे हरे-बैंगनी सीपियों जैसे थे। खाने में बेहद रसीले और मीठे।

उस साल भी दोनों पेड़ों पर भरपूर आम फले थे। यह देखने के लिए कि आम पके हैं या कच्चे, डण्डे मारकर दो-चार बच्चे आमों को ज़रूर गिराते। हमारे घर से बारी के बीच बस एक बड़की गड़ही (तालाब) पड़ती थी। इसे लाँघकर दो-चार फर्लांग चलते ही हम छोटकी बारी के चउरहवा आम के नीचे पहुँच जाते। हमारी नज़र में इसकी गिनती आमों के रईसज़ादों में थी। क्योंकि इस पर चावल-सी सफेदी वाले, मीठे, बड़े-बड़े आम लगते थे। और वह भी बड़ी कम संख्या में। सिन्दुरिया सबसे पहले पकता था इसलिए बच्चों को बड़ा प्रिय था। कुछ पेड़ इतने घने थे कि दोपहरी में भी उनके नीचे अँधेरा रहता। लोग कहते थे कि उन पर विशाल पिशाचों का डेरा है।

आम के पेड़ों के बीच इमली और महुए का भी एक-एक पेड़ था। महुए के पेड़ से हम बहुत डरते थे क्योंकि हमें पक्का विश्वास था कि उस पर कोई बहुत कद्दावर "नट" रहता है। बगल के गाँव से सरयू नदी की ओर जाते वक्त लोग वहाँ ज़रूर रुकते और बुदबुदाते हुए कुछ जादू-टोना करते हैं।

बारी में चहल-पहल की शुरुआत जून के दूसरे हफ्ते से ही हो जाती। बड़े भी अक्सर सुबह-शाम बारी का चक्कर लगाते। उस साल भी आम का बगीचा पूरे शबाब पर था। कई पेड़ों के आम पकने लगे थे। रात को आम बीनने वालों की संख्या बढ़ती जा रही थी। हम लोगों की नींद अक्सर चार बजे के बाद ही टूटती। हमारे वहाँ पहुँचने से पहले ही लोग टपके आम चुन लेते थे। हमें इक्के-दुक्के आमों से ही संतोष करना पड़ता था।

एक दिन हम चार दोस्तों ने रात को ही सबसे पहले आम चुनने का मन बनाया। योजना बनाई। आम रखने के लिए झोलों का प्रबन्ध किया। टॉर्च सिर्फ एक ही के पास था। इसलिए तय हुआ कि टॉर्च की रोशनी में सभी एक साथ आम चुनेंगे। उन्हें अपने-अपने झोलों में रखेंगे और बाद में सारे आम मिलाकर ार बराबर-बराबर चार हिस्से कर लेंगे। कृपा को उसके दादाजी के बगल में सोने का सुझाव दिया गया। क्योंकि वे पूरी रात खाँसते रहते थे। इससे उसे जल्दी उठने में सहूलियत होती। सब कुछ योजना के अनुसार चल रहा था। पर, भूतों से कैसे निपटेंगे? आधी रात में सुनसान बगीचे में भूतों का खतरा सबसे अधिक था। भूत धातुओं से (खासकर लोहे से) डरते हैं। इसलिए पास में लोहा रखना ज़रूरी है परन्तु दया को छोड़कर और किसी के पास लोहे की कोई वस्तु नहीं थी। कृपा के पास टॉर्च था। मुझे याद आया कि मेरे कान की बाली भी तो धातु की ही बनी है। समस्या सिर्फ मुन्नू की थी। कृपा ने भूत दिखने पर मुन्नू को भी टॉर्च पकड़ लेने को कहा।

सभी जल्दी बिस्तरों पर पहुँच गए। सबसे पहले कृपा की नींद टूटी। उसने हम सबको फुसफुसाती आवाज़ में जगाया। सभी चौकन्ने होकर इधर-उधर देखते हुए उठ बैठे। चारों ओर शान्ति छाई हुई थी। हम ने अपना-अपना झोला व टॉर्च सम्भाला और धीरे-धीरे एक-एक कर आगे-पीछे देखते हुए बढ़ चले। गढ़ही के पास पगडण्डी पर पहुँचकर चारों ने लम्बी साँस छोड़ी। सब के मन में इस बात का गुमान था कि आज पोस्टमास्टर भी आम चुनने में हमसे पिछड़ जाएँगे। रोज़ रात को सबसे पहले बारी में वही पहुँचते थे।

हम तेज़ कदम भरते हुए चउरहवा के नीचे पहुँच गए। टॉर्च की रोशनी में हर एक इंच छान मारा लेकिन किसी को वहाँ एक आम भी नसीब नहीं हुआ। हमने आगे बढ़कर दूसरे पेड़ों के नीचे आम बटोरे। सबसे ज़्यादा आम लिटिहवा के नीचे मिले। फिर हम शेरुहुआ के नीचे आ गए। सभी कुछ-कुछ बातें कर रहे थे लेकिन मन के किसी कोने में भूतों की

चमकीली आँखें नाच रही थीं। हम जानबूझकर नज़रें गड़ाए सिर्फ आम ढूँढने में लगे थे लेकिन एक डर चाहे-अनचाहे आमों पर बैठे भूतों की याद दिला रहा था। पूरे बगीचे में बस हम चारों थे। हम जहाँ इस बात से खुश हो रहे थे वहीं डर से सबकी सिट्टी-पिट्टी भी गुम थी। झींगुरों और उल्लुओं की डरावनी आवाज़ें तेज़ हो रही थीं। अब कभी भी भूत से हमारा सामना हो सकता था। सबसे पहले हम उन पेड़ों के नीचे गए जिन पर कमज़ोर या दयालु भूत रहते थे। बिगड़ैल भूतों वाले मशहूर पेड़ों के नीचे हमने सबसे बाद में जाने की योजना बनाई थी। एक-दो पेड़ छोड़कर लगभग सभी पेड़ों के नीचे हमें पके आम मिले। हमारे झोले आधे से ऊपर भर गए थे। रात के चौथे पहर की शुरुआत हो चुकी थी। आसमान की कालिमा अब कुछ धुँधली पड़ने लगी थी जिससे बगीचे में कुछ दूरी तक पेड़ों की धुँधली आकृतियाँ दिखने लगी थीं।

अचानक खटहवा आम के नीचे हमारा हमउम्र छोटका आता दिखाई दिया। उसने आते ही हमें ऐसी खबर सुनाई कि सबके होश उड़ गए। उसने चारकोइलिया की तरफ से सफेद साड़ी पहने उल्टे पाँव वाली एक चुड़ैल को इसी ओर आते देखा था। खबर सुनाकर वह अँधेरे में कहीं गुम हो गया। डर के मारे सभी थर-थर काँपने लगे। हम उस वक्त बड़की बारी के आखिर में खड़े थे। यहाँ से घर की ओर बारी के भीतर से भागने का मतलब था, कई कद्दावर भूतों से हमारा सामना होना। क्योंकि उसी रास्ते में महुए का पेड़ था और कई शक्तिशाली भूतों वाले आम के पेड़ भी थे। घबराहट में हमने तय किया कि बगीचे और गाँव के बीच ताज़ा जोते गए खेत के बीच से भागते हुए हम गाँव की ओर लौटेंगे। ऐसा करने से भूतों को हमारी भनक नहीं लगेगी और चुड़ैल से भी निजात मिल जाएगी। मुसीबत की उस घड़ी में न तो दया को अपने चाकू की याद आई, न कृपा को टॉर्च की। मुझे भी याद नहीं रहा कि मेरे कानों की बालियाँ इस समय मेरी रक्षा कर सकती हैं। हम चारों ने बीच खेत से होते हुए पूरी जान लगाकर दौड़ना शुरू किया। वह खेत जुता हुआ था। हम भागते हुए उसमें कई बार गिरे। गिरते, उठते और फिर दौड़ते। हमारा झोला, उस में रखे आम, टॉर्च, चाकू और चप्पलें कहाँ गईं कुछ याद नहीं रहा। कुछ देर बाद हमें सफेद साड़ी पहनी चुड़ैल हमारी ओर आती दिखाई दी। वह भी तेज़ी से आगे बढ़ रही थी। यह देखकर हम दुगुनी रफ्तार से दौड़ने लगे। अब चुड़ैल की आवाज़ भी हमें सुनाई देने लगी। वह हमारा नाम लेकर बुला रही थी। आवाज़ जब साफ सुनाई देने लगी तो हमने चुड़ैल को यह कहते सुना, "ओ मुन्नू, ओ कृपा। अरे, तुम लोग क्यों इस तरह भाग रहे हो? कोई भूत देखा है क्या?"

अचानक हमें लगा कि यह तो मुन्नू की दोस्त निरूपमा की आवाज़ है। तब तक हम दौड़ते हुए बड़की गड़ही के मुहाने पर आ चुके थे। अब सब कुछ साफ समझ आ रहा था कि वह निरूपमा है जिसने हमारी सारी मेहनत पर पानी फेर दिया था। थोड़ी देर तक हम सब खड़े हाँफते रहे। फिर वहीं बैठकर चैन की साँस ली और चुड़ैल की जगह निरूपमा के होने पर भगवान का शुक्रिया अदा किया। इसके बाद बिखरे आम और चप्पलें ढूँढ़ने निकल पड़े। तब तक आसमान भी साफ हो चुका था। सूरज निकलने की तैयारी कर रहा था। चिड़ियों के चहचहाने और गाय-बैलों के रम्भाने की आवाज़ें आने लगी थीं। काफी मेहनत के बाद हमें चारों थैले, चप्पलें, टॉर्च और कुछ आम मिल गए। लेकिन बहुत से आमों का तो पता ही नहीं चला। सभी थक कर चूर थे इसलिए पके आमों की लालसा भी अब खत्म हो गई थी।

थके-हारे कुछ आम लिए हम घर लौटे। तय हुआ कि इसके बारे में कोई किसी को कुछ नहीं बताएगा। बहुत दिनों बाद इस घटना के बारे में हमने अपने दूसरे दोस्तों को बताया। आज भी जब हम चारों मिलते हैं तो यह घटना याद आ ही जाती है!

सभी चित्रः जितेन्द्र ठाकुर